क्या निर्लज्जता ही आधुनिकता है?

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

भारत धर्म और सदाचार प्रधान देश है। भारत में चरित्र की पूजा होती है, नग्नता और निर्लज्जता की नहीं। यहां अहिंसा, शिष्टाचार और सर्वधर्म समभाव के साथ ही साथ अनेकता में एकता को महत्व दिया गया है। बाहर के लोग भी यहां की शिष्टता से आकर्षित होकर यहां आते हैं और यहां की संस्कृति में रम जाते हैं। भारतवासी कार्य तो स्वयं करते हैं किन्तु उसका श्रेय ईश्वर को देते हैं। ऐसा इसलिए है की उनमें अहंकार न आवे। यद्यपि किसी ने ईश्वर को देखा नहीं हैं फिर भी ईश्वर पर विश्वास करते हैं यही हमारी आध्यात्मिकता है। भारत एक धर्म गुरू देश है। यहां की संस्कृति सबको अपने में समाहित किये हुए है। यद्यपि आजकल पाश्चात्य संस्कृति के अनुकरण से कुछ विकृति आ गयी है, फिर भी उसे सुधारने का प्रयास किया जा रहा है। यहां पर जो कुछ भी नग्नता, निर्लज्जता या खुलापन दिखायी दे रहा है वह पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव है। यह प्रवृत्ति दूरदर्शन के माध्यम से फैल रही है। अंगप्रदर्शन करना और लोगों को अपनी तरफ आकर्षित करना कोई अच्छी बात नहीं है। पुरानी फिल्में भी थीं, जिन्हें देखकर देखने वालों को कुछ शिक्षा मिलती थी। ऐसी फिल्मों में कुछ मूल्य छिपे रहते थे, किन्तु आजकल सर्वत्र नग्नता ही नग्नता दिखलाई देती है। इसके पीछे उद्देश्य यह रहता हैं कि उन्हें प्रसिद्धि प्राप्ति हो।

प्राचीन मूल्यों में विश्वास करने वाले लोगों को आज के आधुनिकता वादी लोग रूढ़िवादी कहते हैं, अंधविश्वासी कहते हैं। ऐसे लोग अपनी बुरी आदतों को आधुनिकता का जामा पहनाकर सभ्यता की श्रेणी में गिनते हैं। किन्तु यदि देखा जाये तो यह आधुनिकता नहीं बल्कि निर्लज्जता है। इसे किसी भी तरह से आधुनिकता नहीं कहा जा सकता है। शराब पीना, जुआं खेलना, नग्न प्रदर्शन करना, स्त्री और पुरुषों का रात में खुली सड़कों पर रंगरेलियां करना किसी रूप में आधुनिकता नहीं है। आज का युग वैज्ञानिक युग है। विज्ञान की सभी शाखाओं ने विकास किया है। नयी–नयी खोजों के माध्यम से समाज और राष्ट्र को सुदृढ़ किया है, जीवन स्तर को ऊंचा उठाया है, यह है आधुनिकता। ईश्वर की इस सृष्टि में सभी प्राणियों में

नर और मादा की रचना हुई है। लिंग भेद के कारण दोनों में परस्पर आकर्षण होना स्वाभाविक है। दोनों के मिलन से, संयोग से सृष्टि चलती है। किन्तु इसकी भी एक मर्यादा है। इस मर्यादा को ध्यान में रखकर यह कार्य किया जाना चाहिए। आधुनिकता निर्लज्जता में नहीं बल्कि संस्कार निर्माण में है। मानव जीवन में संस्कारों का बहुत महत्व है। संस्कारों का बीजरोपण बालपन में ही अच्छे ढ़ंग से किया जा सकता है। जब बच्चा माता के गर्भ से जन्म लेता है तब उसका मस्तिष्क कोरे कागज के समान होता है। धीरे–धीरे परिवार, समाज और वातावरण से वह सीखता है। विकास एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है जो संसार के प्रत्येक जीव में पाई जाती है। यह जीव अमीबा से लेकर व्यक्ति तक कोई भी हो सकता है। विकास और संस्कार की प्रक्रिया गर्भधारण से लेकर मृत्यु तक किसी न किसी रूप में चलती रहती है। इसकी गति कभी तीव्र और कभी मन्द होती है। बालकों में जो संस्कार दृढ़ रूप में डाला जाता है वह आजीवन उसके भविष्य निर्माण में काम आता है। संस्कार भीतर के जगत में रहता है। धीरे–धीरे परिस्थितियों को अनुकूल पाकर वह प्रस्फुटित होता है। जैसे बीज को खेत में बोया जाता है तो इसके लिए वातावरण का भी बहुत प्रभाव पड़ता है तब जाकर बीज वटवृक्ष के रूप में बड़ा होता है। जैसे बीज का वपन होता हैं वैसे ही पौध तैयार होती है और फल मिलता है। बीज संस्कार है जो बच्चे के रूप में रहता है। सभी बच्चों का जन्म एक ही प्रकार से मां के गर्भ से ही होता है। किन्तु वातावरण और परिस्थितियों के प्रभाव से विकास भिन्न–भिन्न हो जाता है। अगर अच्छा संस्कार डाला जाता है तो बच्चा आगे चलकर विकसित होता है और महापुरुष के रूप में परिवार और समाज का नाम रोशन करता है। परिवार में नए बच्चे का जन्म होना परिवार के लिए बहुत खुशी की बात होती है और यह सभी के लिए एक नए सफर की शुरुआत होती है।

बालकों को सिखाने और संस्कारित करने में, उसकी शिक्षा और प्रशिक्षण में बाल–विकास का ज्ञान बहुत उपयोगी है। संस्कार को पहली शिक्षा बालक को मां से मिलती है। बालक मां के सम्पर्क में अधिक रहता है। इसलिए मां के हाव–भाव, पिता के हाव–भाव और अन्यजनों के वृत्ति, प्रवृत्ति और प्रकृति को वह सीखता है। मानव जो अच्छा कार्य करता है, वह उसकी वृत्ति कहलाती है। बार–बार करने से प्रवृत्ति बन जाती है, और प्रवृत्ति ही धीरे–धीरे प्रकृति बन जाती

है। प्रकृति को बदलना बहुत कठिन है। संस्कार और कुसंस्कार परिवार और समाज से ही बालक ग्रहण करता है। यहां पर दो तोते के उदाहरण से इसको समझा जा सकता है। एक तोता संन्यासी के पास था और दूसरा तोता एक डाकू के पास। संन्यासी के पास वाला तोता राम–राम जपता था और डाकू के पास वाला तोता मारो, काटो, लूटो जैसे बुरे वचनों को बोलता था। तोता एक प्राकृतिक प्राणी है किन्तु संन्यासी और डाकू के संस्कार का असर तोते पर पड़ गया। जिससे दोनों की प्रवृत्ति भिन्न–भिन्न हो गयी। निर्लज्जता से समाज में बुराई फैलती है, संस्कारों से समाज में अच्छाई का बीजारोपण होता है। अच्छाई की नीवं पर खड़ा हुआ समाज दृढ़ता पूर्वक खड़ा रहता है। इससे संस्कृति और सभ्यता में स्थायित्व आता है।